समाजशास्त्र का उद्भव तथा विकास
(Rise and Development of Sociology)

प्रत्येक समाज में जैसे-जैसे व्यक्तियों के अनुभव बढ़ते हैं और वे नई-नई परिस्थितियों तथा आवश्यकताओं को महसूस करते जाते हैं, ज्ञान में भी विशेषीकरण बढ़ता जाता है। जहाँ तक समाजशास्त्र का प्रश्न है इसे अक्सर इसलिए एक नया विज्ञान मान लिया जाता है कि इसके आधुनिक स्वरूप का निर्धारण हुए अभी अधिक समय व्यतीत नहीं हुआ है। इसके बाद भी यह नहीं भूलना चाहिए कि समाजशास्त्र मूल रूप से सामाजिक सम्बन्धों, सामाजिक ढाँचे तथा सामाजिक प्रक्रियाओं का अध्ययन करने वाला विज्ञान है।

पश्चिमी समाजों में समाजशास्त्र
(Sociology in Western Society)

19 वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में अधिकांश अर्थशास्त्रियों, दार्शनिकों और इतिहासवेत्ताओं ने आर्थिक परिस्थितियों पर ही सम्पूर्ण ध्यान केन्द्रित करके सामाजिक समस्याओं का अध्ययन किया। ऐसे विद्वानों में हलमैन, एडम मुलर, माउरर, आरनोल्ड, न्यूमन, ड्सलर, स्वैन-फेल्ड, रोशर, हिल्डब्रांड, लौरेन्ज तथा कुछ सीमा तक प्रोधों के नाम प्रमुख हैं। यह वह समय था जब सामाजिक ज्ञान के बहुत उन्नत अवस्था में पहुँच जाने के बाद भी विभिन्न सामाजिक विज्ञानों का रूप एक-दूसरे से बहुत मिला-जुला था। कुछ सीमा तक वैज्ञानिक विधि का प्रयोग होने के बाद भी सामाजिक और आर्थिक घटनाओं के बीच स्पष्ट भेद नहीं किया गया था। अधिकांश सामाजिक

विज्ञान समाज के एक विशेष पहलू का अध्ययन करने में ही लगे हुए थे और कोई भी विज्ञान ऐसा नहीं था जो सम्पूर्ण समाज का अध्ययन करता हो। इसी समय जेम्स मिल (James Mill) ने एक प्रसिद्ध अर्थशास्त्री होते हुए भी एक ऐसे विज्ञान की कल्पना की जो सम्पूर्ण समाज का दर्पण हो। इस इच्छा की पूर्ति प्रसिद्ध समाजशास्त्री आगस्त काम्ट (Auguste Comte) ने सन् 1838 में 'Sociology' अथवा 'समाजशास्त्र' शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग करके की। काम्ट का जीवन एक अर्थशास्त्री से प्रारम्भ हुआ था, लेकिन उनकी इसी सूझबूझ ने उन्हें एक महान् सामाजिक और बाद में 'समाजशास्त्र का जनक' (Father of Sociology) के रूप में प्रदर्शित कर दिया। बाद में जॉन स्टुअर्ट मिल (J.S. Mill) ने इस शब्द का इंग्लैण्ड में व्यापक प्रचार किया और इस प्रकार 'आधुनिक वैज्ञानिक समाजशास्त्र' के अध्ययन की नींव डाली।

19 वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध (सन् 1873) में सर्वप्रथम इंग्लैण्ड में हरबर्ट स्पेन्सर ने समाजशास्त्र पर प्रथम पुस्तक प्रकाशित की और सबसे पहले सन् 1876 में अमेरीका के येल विश्वविद्यालय में समाजशास्त्र का अध्ययन-अध्यापन आरम्भ हुआ। इसके अतिरिक्त इंग्लैण्ड में ही बकल, चार्ल्स बूथ, हॉब्सन, हॉबहाउस, वेस्टरमार्क, मानहीम, गिन्सबर्ग और मिल जैसे प्रसिद्ध समाजशास्त्रियों ने सामाजिक सम्बन्धों और सामाजिक प्रक्रियाओं का विस्तृत अध्ययन किया। फ्रांस में दुर्खीम, माउरटेन, टार्ड और लीप्ले जैसे विद्वानों

ने समाजशास्त्र के विकास में योगदान दिया। जर्मनी में 19 वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध और 20 वीं शताब्दी के आरम्भिक वर्षों में महत्वपूर्ण समाज-शास्त्रीयों ने इस विज्ञान को विक-सित किया। इनमें टॉनीज, वानविज, हीगल, कार्लमार्क्स, मैक्स वेबर, दुरकान्त, सिमेल तथा शेलर के नाम प्रमुख हैं। अमरीका में तो समाजशास्त्र इतना लोकप्रिय विषय बन गया कि वहाँ सभी महत्वपूर्ण विचारक समाजशास्त्री ही हैं। ऐसे विद्वानों में गिडिंग्स, समनर, लेस्टर वार्ड, जेननकी, रास, पार्क, बर्गस, सोरोकिन, जिमरमैन, मैकाइवर, ओगबर्न, लुण्डबर्ग, पारसन्स, मर्टन तथा नेडल आदि प्रमुख हैं। आज संसार के लगभग सभी प्रगतिशील और विकासोन्मुख देशों में समाजशास्त्र को एक प्रमुख विषय के रूप में देखा जाता है और इसीलिए इसका तेजी से विकास हो रहा है।